संगीत भास्कर (प्रथम खंड)
Saṇgeet Bhaskar (Part-I) Sixth Year
तबला/पखावाज (Tabla/Pakhawaj)

पूर्णांक : ४००

शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न पत्र-१००,
द्वितीय प्रश्न पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५)
मंच प्रदर्शन -७५

शास्त्र (Theory)
प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) प्रथम से पंचम वर्ष तक निर्धारित सभी पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन।

(२) उत्तर और दक्षिण भारतीय ताल पद्धति का विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन एवं हिन्दुस्तानी तालों को कर्नाटक ताल पद्धति में लिखनें का अभ्यास। पाश्चात्य ताल पद्धति का विस्तृत अध्ययन।

(३) भारतीय वाद्य वर्गीकरण का आधार, उसकी वैज्ञानिकता प्राचीन काल से वर्तमान काल तक वाद्य वर्गीकरण पर ऐतिहासिक दृष्टिपात।

(४) पाश्चात्य संगीत में ताल और लय का स्थान।

(५) भारतीय संगीत में वाद्यों का वर्गीकरण।

(६) प्रसिद्ध तबला वादकों की जीवनी और कला क्षेत्र में उनकी देन।

(७) ताल संबधी प्राचीन अवधारणाएं, उनकी व्याख्या भरत एवं शारंगदेव द्वारा दी गई अवधारणा का अध्ययन।

(८) ताल रचना के सिद्धांत एवं ताल संबधी समस्त प्रत्ययों का आलोचनात्मक अध्ययन एवं ताल शास्त्र में उनकी उपयोगिता एवं महत्व।

(९) मार्गी एंव देशी तालों का दक्षिणी (कर्नाटकी) ताल पद्धति में प्रयोग, महत्व एवं उनकी उपयोगिता।

Scanned by CamScanner

(१०) भारतीय लोक ताल वाद्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा लोक ताल वाद्यों का परिचय एवं प्रयोग।

(११) पाश्चात्य लेखन पद्धति का विकास। विशेष रूप से स्टाफ नोटेशन पद्धति का समग्र अध्ययन।

(१२) तबला एंव पखावज की विकसित परम्पराओं (घरानों) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विभिन्न परम्पराओं की विशेषता उसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामयिक महत्व।

(१३) विभिन्न सामयिक सांगीतिक विषयों पर मौलिक विचार।

(१४) पाश्चात्य संगीत में अवनद्व वादयों का स्थान ।

(१५) तबला अथवा पखावज व मृदंग के विभिन्न घरानो की उत्पति विकास एव विशेषताऐं ।

द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) तबला अथवा पखावज की उत्पत्ति का इतिहास।

(२) तबला एवं पखावज की निर्माण प्रणाली और उसके विभिन्न अंगों के नाम।

(३) भातखडे तथा विष्णु दिगम्बर पद्धति एवं स्टाफ नोटेशन में निर्धारित तालों के ठेके और उनकी विभिन्न लयकारी आड़, वियाड़ एव कुवाड़ एवं टुकड़ा, परण, पेशकार इत्यादि लिखने का अभ्यास।

(४) निर्धारित तालों में नये टुकड़े, परण तथा कायदा तैयार करके लिपिबद्ध करने की क्षमता।

(५) तबले एवं पखावज से उत्पन्न सहायक नादों की विशेषता।

(६) तबले अथवा पखावज के विभिन्न घरानों का इतिहास और उनकी वादन शैली की तुलना।

(७) तबला और पखावज की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

(८) संगीत संबधी ज्वलन्ता विषयों पर मौलिक चिन्तन।

(९) तबला अथवा पखावज के विभिन्न अंगों व दोनों तरफ आघात करने से उत्पन्न होने वाले विभिन्न बोलों की जानकारी।

(१०) ताल के अंग, ताल शास्त्र में उनका प्रयोग एवं महत्व।

Scanned by CamScanner

(११) ताल रचना, उसके नियम एवं सिद्धांतों का विवेचन, नवीन ताल रचना के आधार।

(१२) लय एवं लयकारी का विस्तृत अध्ययन/जाति-गत आधार पर इसका संबध।

(१३) भारतीय संगीत के प्राचीन एवं मध्यकालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की पृष्ठभूमि।

(१४) तिहाई, इसके प्रकार कायदा एवं इसके प्रकारो को निर्धारित तालों में लिखने का अभ्यास ।

(१५) विभिन्न गायन शैलियों के प्रकार, उनके लिए निर्धारित तालों का अध्ययन एवं उनका प्रयोग ।

(१६) समपदी, विषम पदी तालों की व्याख्या एवं उनका वर्गीकरण, महत्व।

(१७) पाठ्यक्रमीय तालों के अन्तर्गत विभिन्न रचनाओं (बंदिशों) को तालबद्ध करना। विभिन्न लयकारियों को लिपिबद्ध करने की क्षमता।

(१८) भारतीय संगीत का इतिहास एवं प्राचीन काल, मध्यकाल, आधुनिक काल में प्रयुक्त वादयों का विकास

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित तालों को प्रवीणता से बजानें की क्षमता -
तीवरा, रूद्र, रूपक, एकताल, सूलताल, धमार, आड़ाचारताल, ब्रह्म, फरोदस्त और झपताल। तिलवाड़ा जत, दीपचन्दी, गजझम्पा

(२) निम्नलिखित तालों का ठेका तथा साधारण परण, टुकड़ा, पेशकार और कायदा बजानें का अभ्यास-
मत्ततात, मदन (12 मात्रा) और शिखर(17 मात्रा)।

(३) आड़ाचारताल और पंचम सवारी (15 मात्रा) ताल में लहरा बजानें का अभ्यास।

(४) ख्याल, धुपद, धमार, ठुमरी, भजन, कत्थक नृत्य और यन्त्र संगीत के साथ संगत की क्षमता ।

Scanned by CamScanner

(५) पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों में नया टुकड़ा, परण, कायदा, पेशकार, मुखड़ा, मोहरा और तिहाई तैयार करके बजाने का अभ्यास।

(६) पखावज हेतु-तीवरा, सूलताल, धमार, गजझम्पा (इन तालों में पखावज शैली समस्त विशेषताओं सहित वादन सामग्री)।

(७) चारताल का विशिष्ट वादन।

(८) सामान्य अध्ययन -कुम्भ ताल, गणेश, लक्ष्मी ताल। इनमें ताली-खाली सहित लयकारी प्रदर्शन की क्षमता।

(९) हस्त क्रियाओं द्वारा विभिन्न बोल रचनाओं को पढ़ना तथा विभिन्न लयकारियों को प्रदर्शित करना।

(१०) अपने वाद्य को स्वर में मिलाना।

(११) विभिन्न बोलों को विभिन्न वादन शैलियों में बजाने का ज्ञान एवं अभ्यास।

(१२) एकल वादन (Salo) गायन एव वादन की संगत के सिद्धांत्तो का ज्ञान ।

(१३) सुगम संगीत, शास्त्रीय संगीत एवं वृन्दवादन के साथ बजाने का लयात्मक ज्ञान ।

(१४) सगंतकार के रूप में क्रियात्मक प्रवीणता ।

(१५) अन्य अनवद्ध वादयों को बजाने का ज्ञान ।

(१६) विभिन्न बाजो का क्रियात्मक ज्ञान उनके घराने एवं उन्हे बजाने की क्षमता ।

मंच प्रदर्शन - क्रियात्मक परीक्षा हेतु तबला/पखावज के निर्धारित तालों में 20 मिनट की पूर्ण तैयारी के साथ प्रदर्शन की क्षमता।

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

संगीत भास्कर पूर्ण
Sangeet Bhaskar Final (Seventh Year)
तबला/पखावाज (Tabla/Pakhawaj)

पूर्णांक : ४००

शास्त्र- २००, प्रथम प्रश्न पत्र-१००,
द्वितीय प्रश्न पत्र-१००, क्रियात्मक-१२५)
मंच प्रदर्शन -७५

शास्त्र (Theory)
प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) ताल की उत्पत्ति इसके दस प्राण तथा संगीत में ताल की महत्वता का वर्णन ।

(२) शास्त्रीय संगीत, सरल संगीत और यन्त्र संगीत में जितने प्रकार की लयकारी और वादन शैली प्रयुक्त होती है, उनका विवरण।

(३) विभिन्न घरानों (तबला अथवा पखावज) वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

(४) पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का (Staff Notation) पूरा ज्ञान और भारतीय संगीत में उनकी उपयोगिता।

(५) स्वर और ताल का पूर्ण अध्ययन।

(६) तबला अथवा पखावज की वादन शैली का विकास।

(७) तबला अथवा पखावज वादन शैली की परम्परागत तथा आधुनिक शैली के विषय में ज्ञान।

(८) संगीत शिक्षालय तथा संगीत शिक्षण।

(९) गुरू शिष्य परम्परा का महत्व।

(१०) अवन्द्ध वाद्यों में तबला तथा पखावज का स्थान।

Scanned by CamScanner

(११) संगीत में अधारभूत तत्व, उनका विवेचन, महत्व एवं उनकी उपयोगिता पर प्रकाश।

(१२) रस सिद्धांत, व्याख्या, ताल एवं लय का रस के साथ संबध।

(१३) ध्वनि उत्पति का ज्ञान, अपने वाद्य में ध्वनि उत्पति उसके तत्व।

(१४) स्वतंत्र वादन एवं साथ संगति का अन्तर। इनके विभिन्न चरणों का ज्ञान एवं प्रस्तुति संबधी नियम।

(१५) भारतीय संगीत के वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात। विभिन्न मुख्य सांगीतिक संस्थाओं एवं उनके कार्यकलापों की जानकारी।

(१६) दक्षिणी (कर्नाटक) ताल पद्धति के विकास क्रम की पूर्ण जानकारी।

(१७) विभिन्न सांगीतिक समस्याओं पर सूक्ष्म, मौलिक विवेचन।

द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) निम्नलिखित तालों को कठिन लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।- (तबला पखावज)-कुम्भ, लक्ष्मी, विष्णु और फरोदस्त।

(२) प्रथम से सप्तम वर्ष तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों में रेला, टुकड़ा, परण आदि ताल लिपि में (Notation) लिखने का अभ्यास।

(३) चक्रदार परण, कमाली परण, फरमाईशी परण, दुपल्ली, तिपल्ली इत्यादि लिखनें का अभ्यास।

(४) पाठ्यक्रम के सभी तालों में जिस किसी मात्रा से मुखड़ा, बोल और तिहाई लिखने का अभ्यास।

(५) 15वीं शताब्दी के बाद पंजाब में तबले की स्थिति का वर्णन।

(६) संगीत से संबधित विषयों पर निबन्ध लिखनें की क्षमता।

(७) विभिन्न परम्परा (घरानों) के अन्तर्गत विकसित वादन शैलियों की विशेषताओं का अध्ययन एवं उनकी पारंपरिक मौलिक बंदिशों का ज्ञान तथा मूल संस्थापक के नाम एवं वर्तमान में उस परंपरा के संवाहक की जानकारी।

(८) दिये गये बोलों के आधार पर रचना करना तथा उनको लिपिबद्ध करना।

Scanned by CamScanner

(९) भारतीय एवं पाश्चात्य लय प्रकारों तथा ताल वादयों की जानकारी उनका तुलनात्मक अध्ययन।

(१०) समस्त प्रकार की गायन-वादन शैलियों का अध्ययन उनके साथ प्रयुक्त तालों की विवेचनात्मक जानकारी।

(११) पाठ्यक्रमीय तालों की रचनाओं को लिपिबद्ध करना।

(१२) छन्द-लय निर्मित लयकारी का जातिगत आधार पर विशलेषण।

(१३) विभिन्न परंपराओं (घरानों) के प्रमुख व्यक्तियों के विषय में विस्तृत जानकारी एवं उनका सांगीतिक योगदान।

(१४) प्राचीन, मध्य और आधुनिक कालीन ग्रन्थों में वर्णित ताल वादयों के विकास का ज्ञान ।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित तालों को बजानें के विषय में साधारण ज्ञान- कुम्भ, विष्णु, लक्ष्मी, जगदम्बा, ब्रह्म, शिखर।

(२) निम्नलिखित तालों में बजाने की विशेष दक्षता एवं नवहक्का कमाली, फरमाईशी इत्यादि विभिन्न प्रकार की परण बजानें का अभ्यास- त्रिताल, झपताल, झूमरा, दीपचन्दी, धमार, सूलताल, एकताल, चारताल, आड़चारताल, गजझम्पा और पंजाबी ठेका।

(३) निम्नलिखित तालों में संक्षिप्त विस्तार के साथ वादन, अष्टमंगल, ध मार, सूलताल।

(४) पश्तों और कव्वाली ताल में संगत की दक्षता।

(५) कंठ और वादन के साथ विशेष प्रवीणता युक्त संगत की क्षमता।

(६) विभिन्न घरानों की वादन शैली के प्रदर्शन का ज्ञान।

(७) हाथ पर ताली खाली दिखलाकर पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी तालों को विभिन्न लयकारीयो में बोलने का अभ्यास।

(८) तीन ताल का सर्वांगीण प्रदर्शन।

(९) मंच प्रदर्शन - 30 मिनट (षष्टम और सप्तम वर्ष के किसी ताल में)

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner